519

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-11

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 **HL-2411**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नाम (Name): ममता

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 30/08/2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

1	1	0	5	6	3	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

7 वीं सदी में वाममार्गी बौद्ध जो तांत्रिक क्रियाओं और मंत्रों से साधना पद्धति करते थे उन्हीं से सिद्धों का विकास हुआ।

सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है जिनमें प्रमुख है - सरहपा, शबरपा, लुइपा।

* सिद्ध - साहित्य में खड़ी बोली -

सिद्धों ने मध्य भारत के पूर्वी भागों में अपने चर्यापद लिखे जिन पर प्रारंभिक मागधी एवं अर्द्धमागधी अपभ्रंश की बोलियों का प्रभाव देखा जा सकता है।

सिद्धों के काव्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक संख्यावाचक विशेषण देखने को मिलते है जैसे - बइस,

सिद्धों के काव्यों में खड़ी बोली के समान 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग

दिखता है जो आज भी खड़ी बोली की विशेषता है —

"पंडिअ सअल सत्य बक्खाणअ,
देसहिं बुद्ध बसन्त ण जाणअ।"

उपर्युक्त पंक्तियों में अल्पप्राण का ~~स्व~~ लघु स्वर में परिवर्तन भी आरंभिक भाषाओं के अपभ्रंश से बनने की प्रक्रिया को दिखाता है।

एक अन्य विशेषता इकारांत एवं आकारांत देखने को मिलती है जो आज भी खड़ी बोली की प्रमुख विशेषता है।

उपर्युक्त आधारों पर कहा जा सकता है कि खड़ी बोली के आरंभिक संकेत सिद्ध-साहित्य में देखने को मिल जाते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'बुंदेली' बोली

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोली जिसका भौगोलिक विस्तार - झाँसी, आगरा, मैनपुर (U.P) तथा नागपुर (महाराष्ट्र) इत्यादि शामिल है।

— भू-भाग की दृष्टि से पश्चिमी हिंदी की सर्वाधिक व्यापक बोली है।

प्रमुख विशेषताएं

① अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति का होना

जैसे - आधा - आदा

② बुंदेली में ड > र तथा; स > छ मिलता है

जैसे:- सीढ़ियाँ > छिड़ियाँ

③ 'ह' ध्वनि का लोप -

जैसे:- चाहत > चाउत

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(4) बुंदेली के प्रमुख उपसर्ग
- के लाने, के काजे इत्यादि

(5) सहायक क्रिया में 'ह' ध्वनि का प्रयोग नहीं
- हूँ > औं
- हो > आव

(6) स्त्रीलिंग बनाने हेतु 'इन' एवं 'नी' प्रत्यय का प्रयोग।
जैसे :- लड़का > लड़किन

(7) क्रियाओं में -
भूतकाल - 'ता', 'ते', 'ती' रूप
वर्तमान काल -
भविष्यकाल - 'ह', 'ग', 'वे' रूप - ह
जैसे :- होंगे, हुहो

(ग) पहाड़ी हिन्दी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्राचड अपभ्रंश से विकसित पहाड़ी क्षेत्र में - हिमाचल, जम्मू, गढ़वाल, टिहरी, कुमाऊँ क्षेत्र में बोली जाने वाली प्रमुख बोली है।

पहाड़ी हिंदी
- कुमाऊँनी
- गढ़वाली

① कुमाऊँनी -

क्षेत्र - नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़

- राजस्थानी बोलियों का प्रभाव अधिक
- 'ण' व 'ळ' ध्वनियों का प्रभाव दिखता है।
- तिब्बती, चीनी, खस जनजातियों के अनार्य भाषाओं का प्रभाव भी।
- अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति
- सहायक क्रिया 'छ' रूप में

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(2) गढ़वाली –

क्षेत्र – टिहरी, पौड़ी, गढ़वाल क्षेत्र

- पंजाबी एवं राजस्थानी का प्रभाव
- स्वरों में अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति
  जैसे :- छाँयाँ, दँत, पैंसा
- प्रमुख परसर्ग – कूँ, कुणी, सैं, तीं
- ओकारांत बोली – घोड़ो, कालो
- भविष्यकाल – 'लो' रूप
  जैसे :- चललो।
- भूतकाल पर ब्रजभाषा के समान
  जैसे :- चल्यो, खायो

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कृष्णकाव्य धारा के प्रमुख कवि मूलत: अवधी में रचना करते रहे किन्तु उनका 'मदनाष्टक' विषयक प्रयोग स्पष्टत: खड़ी बोली को दिखाता है,

रहीम के काव्य में खड़ी बोली के कई रूप दिखते हैं जिनमें सर्वप्रथम ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली का रूप दिखता है -

"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी बिनु न ऊबरे, मोती, मानुस चून॥"

उपर्युक्त पंक्तियों में पानी, मोती, सब जैसे शब्दों में स्पष्ट रूप से खड़ी बोली ईकारांत एवं अकारांत देखा जा सकता है।

सबसे विशिष्ट प्रयोग तो 'मदनाष्टक' में 8 छंदों की छोटी सी रचना जिसमें स्पष्ट

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रूप से अमीर खुसरो के बाद खड़ी बोली का क्रमिक विकास के रूप में देख सकते हैं —

"पकरि परम प्यारे साँवरे को मिलाओ।
असल अमृत प्याला क्यों न मुझको पिलाओ।"

स्पष्ट है कि रहीम ने खड़ी बोली में पर्याप्त प्रयोगधर्मिता का परिचय दिया है।

आसत रूप से उनकी भाषा का ढाँचा ब्रज एवं अवधी है किन्तु खड़ी बोली के पर्याप्त संख्या में शब्दों को देखा जा सकता है।

शाब्दिक एवं व्यावहारिक रूप से उन्होंने अपने काव्य में खड़ी बोली के शब्दों का ही प्रयोग किया था।

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1875 में "ए ग्रामर ऑफ हिंदी लैंग्वेज" लिख कर केलॉग ने हिंदी के व्याकरण ग्रंथ परम्परा में योगदान दिया है।

केलॉग के व्याकरण की विशेषताएँ

① हिंदी व उर्दू के व्याकरणिक गठन में जो समानता है उसी को आधार बनाया गया है,

② मानक परिनिष्ठित हिन्दी का विकास जिसका विद्यालयों में अध्ययन कराया जा सके।

③ उन्होंने अपने कोष में ब्रज एवं अवधी भाषा का भी विवेचन किया है,

④ अवधी एवं ब्रज के अतिरिक्त हिंदी की अन्य बोलियों के ~~व्याकर~~ व्याकरणिक एवं

धातु रूपों का अध्ययन किया था तथा विवेचन किया है।

(4) इस कोष में उन्होंने उदाहरणों के चयन में अपने समय की पूर्व लिखित पुस्तकों का ही सहारा लिया है (जॉन गिलक्राइस्ट कृत हिन्दुस्तानी ग्रामर)

(5) हिंदी क्षेत्र में प्रचलित चार लिपियों को भी अंकित किया है
जैसे :- नागरी, कैथी, महाजनी, बनियारी

(6) यूरोपीय प्रभाव से अपने ग्रंथ को बचाने के लिए उनकी व्याख्याओं को स्थान नहीं दिया गया।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि द्विवेदी युग तक जब-तक परिनिष्ठित हिन्दी व्याकरण नहीं लिखी गई थी तब तक इन्हीं को आधार के रूप में विद्यालय अध्ययन हेतु प्रयोग किया जाता था

drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आदिकाल में अवधी का रूप अमीर खुसरो के काव्य में दिखता है किन्तु भाषिक प्रगाढ़ता के स्तर पर काव्य भाषा बनाने का प्रथम प्रयास सूफी कवियों के द्वारा ही किया गया।

इसी संबंध में शुक्लजी का कथन है कि "अवधी की खालिस एवं कोमल मिठास के लिए पदमावत का नाम बराबर लिया जाएगा।"

सूफी काव्य धारा का योगदान -

1. अवधी क्षेत्र में प्रयुक्त लोक जीवन के मुहावरों का प्रयोग — 'हिय फरा'
2. देशज शब्दों का प्रयोग — मानसून की प्रथम वर्षा हेतु प्रयुक्त शब्द - 'दवँगरा' का प्रयोग
3. ठेठपन, देशीपन, लोक-संस्कृति का सम्पूर्ण चित्रण।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(4) बिंब योजना एवं अप्रस्तुत योजना भी जानदार नज़र आती है जैसे :-

" जेठ जरै जग बहै लुवारा ।
उठै बवंडर धिकै पहारा ॥"

प्रमुख रचनाकारों का योगदान

(1) मुल्ला दाउद - इनकी रचना 'चंदायन' को ही अवधी तथा सूफीकाव्य की प्रथम रचना मानी जाती है इसी रचना से अवधी भाषा काव्य-भाषा के रूप में स्थापित हुई थी ।

(2) कुतुबन - इनकी रचना 'मृगावती' है जो लोक प्रचलित प्रेमाख्यानों को अपना विषय बना कर आम-संस्कृति की मिठास घोलते हैं ।

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) मलिक मोहम्मद जायसी - इनकी रचना 'पद्मावत' ने तो अवधी को अपने ठेठपन, ~~मिठा~~ मिठास हेतु अमर ही बना दिया इनकी रचना ने व्यापक जन - ग्राह्य बना दिया।

— इन्होंने तत्समी शब्दों को भी अवधीकरण करके प्रस्तुत किया जैसे:- मिठासू, जोगू, इंदू इत्यादि

आचार्य शुक्ल - "जायसी की पहुँच अवध में प्रचलित लोकभाषा के भीतर बहते हुए माधुर्य स्रोत तक थी।"

उपर्युक्त कथन के आलोक में शुक्ल जी ने जायसी की ठेठपन के साथ अवधी भाषा में कुशलता को व्यक्त किया है।

(4) अन्य कवि -

उसमान की चित्रावली, नूर मोहम्मद की अनुराग बाँसुरी प्रमुख है जिन्होंने आगे अवधी में तत्समीपन को बढ़ावा दिया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भारतीय परम्परा निरन्तरता को समाहित किये हुये है जिसमें 'साहित्यिक परिचय' एक प्रमुख प्रवृत्ति है प्राचीन काल से ही भारत में इंडिका (मेगास्थनीज) यू-ची-ना (फाह्यान) जैसे विद्वान आये हैं और उन्होंने अपनी रचनाओं तथा भारतीय साहित्य को अपनी भाषाओं में रूपांतरित या अनूदित किया है।

वर्तमान काल में अंग्रेजों के आगमन से भारतीय साहित्य में रुचि एवं जानने की जिज्ञासा ने अनूदित कार्य को ~~ह~~ और तेज किया — जिनमें प्रमुख है कालिदास के नाटक।

भारतेन्दु युग भी अनूदित की दृष्टि से प्रमुख है उनके मंडल में दोनों तरीके के अनूदित काल दिख जायेंगे - भारतीय अनूदित एवं अंग्रेजी अनूदित।

भारतेन्दु का नाटक 'दुर्लभबंधु' शेक्सपीयर

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के नाटक मर्चेंट ऑफ वेनिस का ही अनुवाद था

स्वातंत्र्योत्तर भारत में अनुवाद का कार्य तीव्र हुआ शिक्षा विभाग के समर्थन से विश्व के अनेक प्रसिद्ध काव्यों एवं पुस्तकों का अनुवाद स्थानीय भाषाओं में होने लगे।

जैसे:- कार्लमार्क्स की पुस्तक - 'दास कैपिटल' का अनुवाद

- दिल्ली विश्वविद्यालय ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया ~~जिन~~ जिनमें प्रमुख है -

प्रो० रोमिला थापर → 'पूर्वकालीन भारत'

प्रो० बिपिन चंद्र → भारत का स्वतंत्रता संघर्ष

प्रो० ~~कामी~~ कमर्की बसु → लोक प्रशासन: बदलते परिप्रेक्ष्य

शिक्षा विभाग ने बाल साहित्य के अनूदित

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

का कार्य भी किया है —

जैसे :- बसंत गोवरीकर – "इसरो की कहानी"

इसके अतिरिक्त निजी स्तर पर भी कई प्रकाशकों, लेखकों एवं समाज सुधारकों ने इस दिशा मे कार्य किया है प्रमुख है —

पुस्तक	मूल लेखक	अनूदित कर्ता
सोफी का संसार	जोस्टीन गार्डर	→ राजकमल प्रकाशन
स्त्री उपेक्षिता	सिमोन द बोआ	→ हिंदी पॉकेट बुक
मनोविश्लेषणवाद	सिग्मन फ्रायड	→ राजकमल प्रकाशन
भारत: गांधी के बाद	रामचंद्र गुहा	→ पेंगुइन प्रकाशन

वर्तमान में अनुवाद कार्य में प्रभा खेतान, सुशांत झा, प्रभात रंजन इत्यादि प्रमुख कार्य कर रहे हैं जो भारतीय अन्य आर्य भाषाओं का आपसी अनुवाद भी उपलब्ध करा रहे हैं।

drishti
दृष्टि The Vision

(ग) सर्वनाम और उसके भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सर्वनाम – जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो वह सर्वनाम कहलाता है जैसे :- मैं, तुम, वह इत्यादि।

– सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा पदों की आवृत्ति को रोकने हेतु किया जाता है।

हिंदी में सर्वनाम के भेद → छह भेद माने गये हैं।

- पुरुषवाचक सर्वनाम
- प्रश्नवाचक सर्वनाम
- संबंधवाचक सर्वनाम
- निश्चयवाचक सर्वनाम
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- निजवाचक सर्वनाम

① **पुरुषवाचक** – हिन्दी में 3 पुरुष स्वीकार किये गये हैं –

सर्वनाम के	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं / हम	हम / हम लोग
मध्यम पुरुष	तू / तुम	तुम / तुम लोग
अन्य पुरुष	वह	वे

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(2) प्रश्नवाचक - वह सर्वनाम जो किसी वस्तु व व्यक्ति के संबंध में प्रश्न का संकेत करे
जैसे :- अमन 'कहाँ' गया ।

(3) संबंधवाचक सर्वनाम - इसका प्रयोग प्रायः मिश्र वाक्यों में, एक से अधिक वाक्यों का आपसी संबंध बताने हेतु किया जाता है -
'जो' पढ़ेगा, 'वह' सफल होगा।

(4) निश्चयवाचक सर्वनाम - किसी संज्ञा की निश्चयात्मकता के व्यक्त करने हेतु प्रयुक्त ।
जैसे :- 'यही' राम का घर है ।

(5) अनिश्चयवाचक सर्वनाम - जब संज्ञा की अनिश्चितता को व्यक्त करता हो ।
जैसे :- कोई आया है ।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(6) निजवाचक सर्वनाम – जब संज्ञा उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष में अपनेपन का बोध कराता है तो निजवाचक सर्वनाम होता है।

जैसे :- यह 'मेरा' घर है।

* सर्वनाम हिंदी में केवल वचनानुसार ही परिवर्तन होता है जबकि संस्कृत एवं अंग्रेजी में लिंग एवं वचन दोनों के अनुसार परिवर्तन होता है।

	हिन्दी	संस्कृत	अंग्रेजी
पुल्लिंग	वह जाता है	सः गच्छति	He goes
स्त्रीलिंग	वह जाती है	सा: गच्छति	She goes
एकवचन	वह जाता है	सः गच्छति	He goes
बहुवचन	वे जाते हैं	तेः गच्छंति	They go

3. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राष्ट्रभाषा के तौर पर हिंदी के विकास में हिंदी भाषी राज्यों के साथ-साथ गैर-हिंदी भाषी राज्यों – महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु इत्यादि का प्रमुख योगदान है।

प्रमुख गैर-भाषिक राज्यों का योगदान

(1) <u>गुजरात</u> – स्वयं महात्मा गांधी ने <u>1918</u> से <u>हिन्दी सम्मेलन</u> से राष्ट्रभाषा के तौर पर हिन्दी को अपनाने पर बल दिया तथा "हिंदी ही हिन्दुस्तान की ~~प्रमुख भाष~~ राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए।" – कह कर राष्ट्रभाषा के ~~स~~ लिए हिंदी का निर्धारण तय कर दिया।

(2) <u>महाराष्ट्र</u>

<u>प्रमुख समर्थक</u> – तिलक, गोखले, काका कालेलकर, एन. सी. केलकर।

drishti | दृष्टि The Vision

- 1936 में पटेल ने "काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति" के माध्यम से तथा वर्धा समिति, बंबई विद्यापीठ, हिंदी प्रचार समिति इत्यादि के माध्यम से हिंदी को ही राष्ट्रभाषा होना चाहिए के लिए प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे थे।
- सिनेमा ने भी महाराष्ट्र में योगदान दिया।

③ बंगाल —

प्रमुख समर्थक - डॉ. राजेंद्र लाल मित्र, बंकिमचंद्र चटर्जी अरविंद घोष, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, टैगोर।

- नेहरू रिपोर्ट में बंगाल के प्रमुख नेताओं ने हिंदी के राष्ट्रभाषा होने का समर्थन किया।
- विद्यालयी स्तर पर हिंदी की शिक्षा में योगदान दिया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

④ आंध्रप्रदेश

प्रमुख समर्थक - पट्टाभि सीतारमैया, मोटूरि सत्यनारायण प्रमुख है।

- 1918-19 में 'हिन्दी प्रचार सभा' की शाखाएं खोली गई।
- विद्यालय में हिंदी पढ़ाये जाने का समर्थन किया

⑤ तमिलनाडु -

समर्थक - ई॰ वी॰ रामास्वामी, सी॰ राजगोपालाचारी, विजयराघवाचार्य इत्यादि,

- 1918-19 - हिन्दी प्रचार समिति का गठन
- दक्षिण भारत राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, ~~सन्~~ 1927 की स्थापना
- विद्यालयों, ~~सभा~~ सर्वदलीय भाषणों, अखबारों के स्तर पर भी हिंदी का प्रचार किया गया।

drishti | दृष्टि The Vision

(6) केरल –

प्रमुख समर्थक – दामोदर उण्णाणी, के.वी. नायर, शंकरानंद इत्यादि।

- हिन्दी प्रचार सभा की शाखा को खोला गया।
- घर, विद्यालय, सरकारी कार्यालय में हिन्दी से कार्य हो का समर्थन किया।

(7) अन्य राज्य –

- असम – असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति
- उड़ीसा – हिन्दी शिक्षण मंदिर
- पंजाब – राष्ट्रीय शिक्षण विद्यालय (लाला लाजपत राय)
- कर्नाटक – मैसूर रियासत हिंदी समिति।

उपर्युक्त सभी संस्थाओं एवं समर्थकों के अथक प्रयास से हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना आसान हुआ तथा राष्ट्रीय आंदोलन को एकता के सूत्र में पिरोया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मागधी अपभ्रंश के विकास क्रम में चार भाषाओं (बांग्ला, ओड़िया, असमिया, मैथिली) के साथ एक उपभाषा का भी विकास ~~हुआ~~ बिहारी हिंदी के रूप में हुई।

भौगोलिक क्षेत्र -

— बिहार एवं झारखण्ड के अधिकांश क्षेत्र एवं तराई क्षेत्र में प्रचलित है।

बिहारी हिंदी की बोलियाँ

- भोजपुरी
- मैथिली
- मगही

① **भोजपुरी**

→ 'ण' ध्वनि का प्रयोग नहीं

→ 'ड़' को प्रायः 'र' के रूप में उच्चारित करना जैसे:- सड़क > सरक

थोड़ा > थोरा

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

→ 'स' तथा 'श' के स्थान पर 'ह' का प्रयोग।

जैसे:- निश्चय > निहचय

→ 'ऐ' और 'औ' का उच्चारण क्रमश: 'अइ' तथा 'अउ' के रूप में करना।

जैसे:- पइसा, गउना

→ संज्ञा के तीन रूप - घोरा, घोरवा, घोरउआ

→ ~~एक वचन का~~

→ एकवचन को बहुवचन करने हेतु प्राय: लोगन, जन लगा देते है

जैसे:- हमलोगन

→ सर्वनाम के रूप - तोहरा, ओकरा, जोन

(2) मगही -

क्षेत्र - पटना, गया, हजारीबाग क्षेत्र

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

→ अधिकरण कारक में 'मों' परसर्ग का प्रयोग

→ सर्वनाम में 'आप' का प्रयोग

→ शेष विशेषताएँ भोजपुरी ~~वाली ही है~~ के समान ही है।

③ मैथिली – मैथिली अब एक स्वतंत्र भाषा बन चुकी है

क्षेत्र – दरभंगा, पूर्णिया, भागलपुर, मधुबनी

→ मैथिली में 'छ' व 'ल' ध्वनियों का प्रयोग अधिक

→ सभी शब्द स्वरांत होते है,

→ अहां, ओकर, एकर जैसे सर्वनाम का प्रयोग

→ छः रूप का प्रयोग ~~सहायक~~ सहायक क्रिया के रूप में किया जाता है,

→ एकवचन से बहुवचन बनाने हेतु → सम, सबहि, लोकन इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया जाता है,

(ग) हिंदी गद्य के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अंग्रेजों के समय भारत अनेक क्षेत्रीय ~~भौगि~~ भौगोलिक प्रदेशों एवं अनेक भाषाओं के क्षेत्र रूप में विभाजित था। जिससे शासन संचालन कठिन कार्य था अतः उन्होंने एक व्यवस्थित स्थिति प्राप्त करने के लिए दिल्ली क्षेत्र को राजधानी के रूप में तथा इसके आस-पास के क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा ~~को~~ खड़ी बोली को प्रमुख स्थान दिया।

इस कार्य में ईसाई मिशनरियों की महत्वपूर्ण भूमिका है इस कार्य की पृष्ठभूमि जिसने तैयार की थी वह ईसाई मिशनरिज थे। 1813 में जब कम्पनी का एकाधिकार समाप्त हुआ तथा ईसाई मिशनरियों को धर्म प्रचार की अनुमति मिल गई तब उन्होंने सबसे पहले अपना लक्ष्य शोषित, वंचित आम जनता को बनाया किन्तु उन्हें अंग्रेजी भाषा का

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

ज्ञान नहीं था और इन्हें भारत की क्षेत्रीय भाषाओं की अधिकता के कारण। समस्या उत्पन्न हो रही थी।

अतः इन्होंने खड़ी बोली हिंदी जो उस समय सबसे अधिक संख्या में बोली जाती है को अपनी प्रमुख भाषा बनाया।

हिन्दी की अनेक रचनाओं को समझने के लिए उनका संस्कृत से अनुवाद कराया तथा अपने ग्रंथों को जनता तक पहुँचाने हेतु हिन्दी में अनुवाद कराया।

हिन्दी को एक सम्पर्क भाषा के रूप में चुना।

हिन्दी के गद्य का विकास पूर्णतः के साथ भारतेन्दु युग में मिलता है जिससे पूर्व भारतेंदु युग हेतु पृष्ठभूमि इन ईसाई मिशनरियों ने ही तैयार की थी।

drishti | दृष्टि The Vision

फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता (1801) की स्थापना के साथ यहाँ हिंदी विभाग की स्थापना तथा चार शिक्षकों के – लल्लू लाल, सदलमिश्र, इंशाअल्ला खाँ, सदासुखलाल – के योगदान से हिंदी गद्य को प्रमुखता मिली।

कॉलेज में ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से ही अनेक व्याकरणिक ग्रंथों की व्यवस्था भी की गई जिससे हिन्दी को समझा जा सके।

इस प्रकार ईसाई मिशनरियों ने हिन्दी गद्य के क्षेत्र में शुरूआती योगदान महत्वपूर्ण है। जिससे भारतेंदु मंडल के लिए एक पूर्वपीठिका के निर्माण में योगदान दिया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'अंधायुग' नाटक का महत्त्व।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) तारसप्तक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अनुशीलन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

7. (क) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) पद्माकर के श्रृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में निहित 'राष्ट्रीयता की चेतना' पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

8. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' की उदात्तता पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के रचना-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'प्रगतिशील चेतना' की दृष्टि से 'नाथ-साहित्य' पर विचार करते हुए उसका साहित्यिक महत्त्व बताइए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

Space for Rough Work